ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना

S. Shafi Haider Amil

Associate Professor, Department of Hindi, Shia PG College, Lucknow, India

सार

राष्ट्र के प्रति अपनत्व तथा अगाध प्रेम की भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। आज राष्ट्रीयता एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा है। राष्ट्रीयता का संबंध केवल जड़भूमि से न होकर आंतरिक होता है। अपने देश के अगाध प्रेम में अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गौरव में, अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाली सामूहिक भावना की एक ऐसी उच्चतम अभिव्यक्ति है जिसका इतिहास-निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है।

कुंजी शब्द: राष्ट्रीय भावना, सभ्यता, संस्कृति, बलिदान, रंगभेद, जातिगत भेद भावना

परिचय

राष्ट्रीयता के कारण समाज में ऐसी स्नेहशीलता निर्माण हो जाती है, जिसकी वजह से लोग एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। ''राष्ट्रीयता के लिए देश की अथवा राज्य की इकाई होना आवश्यक है। यह बात दूसरी है कि विभिन्न युगों में देश अथवा राज्य की सीमाएं घटती-बढ़ती हैं। सीमाओं के अनुपात में ही राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण में अंतर आ जाता है।'' हमारी राष्ट्रीय भावना रंगभेद, जातिगत भेद आदि से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति तन-मन-धन से समर्पित होने की रही है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक हिन्दी कविता में इस राष्ट्रीय भावना का खूब वर्णन मिलता है। आधुनिक हिन्दी कविता की 'राष्ट्रीय काव्यधारा' के कवियों का तो इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसी भी देश का साहित्य वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बनता व बदलता है। "साहित्य का मानव जीवन से चिरंतन सम्बन्ध है। साहित्य का स्रष्टा मनुष्य है और मनुष्य के लिए ही साहित्य की सृष्टि है। मानव जीवन ही साहित्य का उपादान और विषयवस्तु रहा है और रहेगा। मानव जीवन विकासशील वस्तु है, इसीलिए साहित्य भी विकासशील वस्तु है।"[1,2]

ज्यों-ज्यों परिस्थितियाँ बदलती हैं हमारा साहित्य भी उसी के अनुरूप नया रूप लेने लगता है। भारतीय राष्ट्रीयता में अंग्रेज जाति के संपर्क से परिवर्तन आया। "राष्ट्रीयता भारत के लिए नवीन विश्वास थी। इसके पूर्व इस देश में यह बात अपरिचित थी।3 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना जागृत होने लगी। शासकों से ही प्रेरणा लेकर भारतीय लोगों के मन में स्वाधीनता के भाव पैदा होने लगे। स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती, लोकहितवादी चिपलूणकर, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके मण्डल के अन्य कवि एक साथ मैदान में आए। इन्होंने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने का स्तुत्य प्रयास किया। इन्होंने राष्ट्रीयता के जो बीज बोए थे, उन्हीं को पल्लवित करने का कार्य आधुनिक हिन्दी कविता के कवियों ने किया।[3,4] अपने देश के प्रति हरेक व्यक्ति का लगाव रहता है। भारतवासी तो अपनी भूमि के प्रति सदा पुनीत भावना ही रखते आए हैं। इसी पुनीत भावना का वर्णन हिन्दी कवियों ने किया है। हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता की भावना प्रमुख रही है। 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में जब स्वाधीनता संग्राम में तीव्रता आ गई थी, उसी के परिणामस्वरूप हिन्दी कविता में राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति आदि विषयों की प्रधानता हो गई। हिन्दी कवि नवजागरण से प्रभावित हुए। इसी से प्रभावित होकर कवियों ने राष्ट्रीयता के गीत गाए। राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरोत्थान में कवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' पुस्तक नवजागरण की अग्रदूत है। इसमें देश के अतीत गौरवगान से लेकर

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

देशप्रेम की भावना का वर्णन मिलता है। भारतेन्दु काल में अंग्रेजों की स्तुति के साथ-साथ भारतीयता के गीत भी गाए गए। इस काल में यदि राष्ट्रीय भावना या देश के बारे में लिखा जाता था तो उन कवियों की रचनाओं को जब्त कर दिया जाता था या फिर उन कवियों को क्रांतिकारी कहकर जेल में डाल दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत काव्य की यह परंपरा द्विवेदी युग में अपने उच्चतम शिखर पर थी। इसलिए इस काल में राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण काव्य लिखा गया।[5,6]

विचार-विमर्श

राष्ट्रीय काव्य-रचना के लिए वातावरण का प्रक्षुब्ध होना तथा समाज का संघर्षरत होना अपेक्षित है । हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रारंभ से देश में आजादी की लड़ाई का वातावरण तैयार हो गया था ।इसी तरह वीरगाथा काल से ही राष्ट्रीय भावना और प्रभुब्ध वातावरण के भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं, जिनका प्रभाव तत्कालीन कवियों की रचना पर पड़ा था । वीरगाथा काल की राष्ट्रीयता राजाओं के व्यक्तिगत मानापमान, शौर्य-प्रदर्शन तथा अपने राज्य की रक्षा तक ही सीमित था ।उस समय कवियों को राज्याश्रय प्राप्त था, जो अपने आश्रय-दाताओं पर वीर रस प्रधान कविताएँ रचते थे । वीरगाथा काल के 'रासो' काव्य इसके प्रमाण हैं । भक्तिकाल के भक्त-कवियों ने तत्कालीन हिंदू जनता की युद्धजन्य पराजित दैन्य को राम-कृष्ण गाथाओं द्वारा दूर करने की कोशिश अवश्य की थी, किंतु उनके काव्यों को राष्ट्रीय काव्य नहीं कहा जा सकता ।

रीतिकाल में मुगल शासन के विरुद्ध छिटपुट राजाओं का व्यक्तिगत मुक्ति-संग्राम तथा उनके दरबारी कवियों द्वारा रचित वीरकाव्य द्रष्टव्य हैं । अकबर के विरुद्ध राणाप्रताप और औरंगजेब के विरुद्ध शिवाजी का युद्ध-प्रयास हिंदू राष्ट्रीयता तक सीमित था ।अत: भूषण, सूदन और लाल की वीर रचनाएँ आश्रयदाता से हटकर साधारण जनता की नहीं बन पाई थीं । सन् १८५७ के बाद भारत में सामंतवादी राष्ट्रीयता के बदले जनतांत्रिक राष्ट्रीयता का श्रीगणेश होता है । अंग्रेजों की दमन नीति और अर्थशोषण के विरुद्ध पहला स्वर भारतेंदु की रचना 'भारत दुर्दशा में फूट पड़ा ।[7,8]

द्विवेदी-युग में राष्ट्र के गौरवशाली अतीत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रगीतों में मुक्ति-संग्राम के अभियान-गीतों का स्वर विशेष उच्चारित हुआ । क्रांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथों में आया । उन्होंने सत्य, अहिंसा, सविनय अवज्ञा, असहयोग आदोलन का राजनीति में प्रयोग किया, जिसके समांतर सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षिक सुधार-आंदोलन भी जोर पकड़ता गया ।

19वीं सदी विश्व में मानवतावादी समाज के लिए संघर्ष से युक्त थी। इस समय अंग्रेजों का शासन विश्व के अधिकतर देशों में था। अंग्रेज जनमानस को तरह-तरह से प्रताड़ित कर रहे थे। जिससे अत्यधिक देशों के लोगों के हृदय में आक्रोश व्याप्त हो गया था। विश्व में क्रान्ति का आगाज होते ही भारत में भी असंतोष व्याप्त हुआ, जिससे आम जनमानस से लेकर क्रान्तिकारी, लेखक, नेता सभी स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े। भारतीय क्रांति को देखकर ब्रिटिश हुकूमत ने दमनात्मक रवैया अपनाया और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर आघात पहुंचाया जाने लगा। जिससे जन आक्रोश के साथ लेखकों की कलम की धार तेज हो गई तथा लेखकों ने लेखकीय दायित्व को समझते हुए अंग्रेजो की वास्तविकताओं को भारतीयों के सामने लाया जाने लगा। कवियों ने अपनी कविताओं से जनमानस के हृदय में प्राण फूंक दिए तथा एक-एक करके कई कवियों पर अंग्रेजी शासन ने पाबन्दी लगा दी। कुछ को जेल में डाल दिया। इसके बावजूद कवि अपनी रचनाओं द्वारा जेल से ही भारतीयों का आवाह्न करते रहे।[9,10]

आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी में राष्ट्रीय काव्य या राष्ट्रीय साहित्य जैसे शब्दों का प्रयोग नही मिलता है। राष्ट्रीयता का स्वरूप आधुनिक काल से पूर्व चन्दबरदायी और भूषण के साहित्य में प्राप्त होता है, किन्तु उसमें आधुनिककाल जैसी प्रखरता नही है। हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा को सशक्त बनाने में बहुत से श्रेष्ठ कवियों का योगदान है, जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत, रामकुमार वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान इत्यादि के नाम प्रमुख हैं ।[11,12]

राष्ट्रीय काव्यधारा का उदय आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से होता है जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने की बात करते हैं। वे निजभाषा को प्रधान घोषित करते है, क्योंकि निज भाषा से ही मानव में चेतना का समावेश होता है और चेतना के जाग्रत होने पर वह राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत हो जाता है। राष्ट्र निर्माण में निज भाषा के महत्व को दर्शाते हुए भारतेन्दु जी कहते है-

''निजभाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सो उत्पात,

विविध देश मतहू विविध, भाषा विविध लखात।''

परिणाम

यह संपूर्ण आंदोलन हिंदी कविता में प्रतिबिंबित हुआ । गुप्त, दिनकर, पंत, निराला, नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी, श्याम नारायण पांडे आदि सभी कवियों ने देश के लिए त्याग-बलिदान से ओत-प्रोत मुक्तक गीत और खंडकाव्य रचे । राष्ट्रीयता के प्रतीक के रूप में 'वंदे मातरम्', 'जन गण मन अधिकनायक' जैसे गीतों तथा राष्ट्रीय पताका का गौरव बढ़ा ।[13,14]

इस राष्ट्रीय विचारधारा से जनता की भावना जाति और धर्म की संकीर्णता से उठकर राष्ट्रीय एकता के पक्ष में व्यापक बनी; आत्मगौरव बढ़ा, अपनी संस्कृति के प्रति आस्था का प्रत्यावर्तन हुआ । इस तरह जन-जागरण का काम राष्ट्रीय कविताएँ सफलतापूर्वक करती रहीं । राष्ट्रीय विचारधारा के कारण आधुनिक हिंदी कविता-विधा की प्रतिष्ठा बड़ी । इतना ही नहीं, हिंदी स्वयं राष्ट्रभाषा कहलाई ।

साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण समाज में व्याप्त विचारधारा साहित्य की काव्य-विधा में भाव-प्रवणता के साथ व्यक्त होती है । हिंदी सदा देशकाल के अनुसार जन- भावना को व्यक्त करती रही है । जीवन में राष्ट्रीय भावनाओं का बड़ा महत्त्व है । हिंदी कविता ने इस दायित्व का पूरी तरह से निर्वाह किया है और देश को जाग्रत् किया । कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय भावनाएं हिंदी कविता में सर्वाधिक व्यक्त हुई हैं ।[15,16]

राष्ट्रीय कवि के रूप में विख्यात मैथलीशरण गुप्त जी अपनी राष्ट्रीय रचनाओं से भारतीय पटल पर अप्रितम छाप छोड़ते है। भारत - भारती लोगों के हृदय में इस तरह समावेशित हो जाती है कि लोग रामायण, गीता के समान भारत-भारती के एक एक पद का वाचन करते हैं और लोगो को राष्ट्र के प्रति स्वदायित्व को जगाते है, भारत भारती की पंक्तियों को सुनाते है। गुप्त जी ने इसमें अतीत, वर्तमान, भविष्य का ऐसा बिम्ब प्रस्तुत किया है कि जिसे पढ़ते ही मुर्दे व्यक्ति में चेतना का संचार हो जाए। इसमें अतीत काल के इतिहास को पढ़ने हेतु नई पीढ़ी को प्रेरित किया गया है। वर्तमान को साधते हुए भविष्य का संधानकर मार्ग प्रशस्त किया गया है। आर्यभूमि की प्रशंसा में कवि कहता है-

''भूलोक का गौरव / प्रकृति का पुण्यलीला स्थल कहाँ,

फैला मनोहर गिरि हिमालय / और गंगा जल जहाँ

सम्पूर्ण देशों से अधिक / किस देश का उत्कर्ष है,

उसका कि जो ऋषि भूमि है / वह कौन भारतवर्ष है।''

'किसान' कविता में गुप्त जी राष्ट्रीय चेतना का संचार करते है। किसान स्वाभिमानी स्वभाव का होता है। वह कर्जविहीन रहकर जमीन की रातदिन सेवा करता है तथा जमीन के सीने को चीरकर उसे हरा भरा बनाता है तथा अन्न को उत्पन्न करके स्वयं के साथ देश के लोगों का पालन पोषण करता है। गुप्त जी एक आदर्श किसान का चित्र खींचते हुए कहते हैं-

''टिगरिस तट पर युद्ध स्थल में / वीरोचित गति को पाकर,

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

अन्तिम वाणी से पल-पल में / निज शोभित से लिखवाकर

हे भारत मरने से पहले / यह तेरा किसान सैनिक,

तुझे दिए जाता है पहले / आत्मचरित्र ही चिर दैनिक''[17,18]

सियाराम शरण गुप्त का साहित्य में अपना स्थान है। ये गांधी के पदचिन्हों में चलने वाले साहित्यकार थे। जीवन की लम्बी यात्रा में गुप्त जी अधिकतर अस्वस्थ रहे, किन्तु गुप्त जी ने साहित्य कर्म को कभी छोड़ा नही, बल्कि उसको साधना मानकर निरन्तर साधनारत रहे। सियारामशरण गुप्त जी गांधीवाद के समर्थक थे, इसलिए गांधी जी के आदर्शो के प्रति पूर्ण श्रद्धा होने से इनके जीवन में नया मोड़ आ गया जिसका निर्वाह इन्होनें जीवन पर्यन्त किया। सम्पूर्ण विश्व युद्ध के भयंकर सिंह नाद से त्रस्त था इसलिए आदमी उस समय शान्ति की छाया को भी प्राप्त नही पा रहा था, जो मानवहित के लिए जरूरी है। हिंसा कितनी ही बलवती क्यों न हो, किन्तु उसे अन्त में शान्ति का मार्ग प्रशस्त करना होगा। इसी शान्ति के पक्षधर गुप्त जी सम्पूर्ण विश्व को अपना कुटुम्ब मानते हैं। वे विविध धर्मो या देश की सीमाओं को स्वीकार नही करते थे। उनके हृदय में सम्पूर्ण विश्व के जीवों के प्रति करूणा का भाव था, विश्व कल्याण की भावना से रत गुप्त जी जमीं पर सदैव रहे। वे कहते हैं-

''जय-जय भारतवर्ष हमारे / जय-जय हिन्द हमारे हिन्द।

विश्व सरोज के सौरभ मय / प्रिय अरविन्द, हमारे हिन्द।

सबके लिए अभय है जग में / जन-जन में तेरा उत्थान।

बैर किसी के लिए नही है /प्री ति सभी के लिए समान।।''[19,20]

पण्डित रामनरेश त्रिपाठी राष्ट्रीय काव्य धारा के मुख्य कवि हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी त्रिपाठी जी गांधीवादी दर्शन के अग्रदूत तथा भारतीय परम्पराओं के पोषक कवि हैं। गांधी जी से प्रभावित होकर त्रिपाठी जी ने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया तथा दो वर्ष तक जेल में रहे किन्तु देश प्रेम का भाव नही छोड़ा, बल्कि अंग्रेजो के इस कृत्य के बाद उनमें राष्ट्रीय चेतना का और अधिक संचार हुआ। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'पथिक' श्रेष्ठ रचना है। पथिक के सामने उत्पन्न होने वाली समस्याएँ उनकी स्वयं की है, जो उन्होनें पथिक के माध्यम से स्वयं की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। पथिक सभी से सहयोग प्राप्त कर अपना मार्ग प्रशस्त करता है। वह गरीबों, मजदूरों, किसानों, क्रान्तिकारियों, देशभक्तों का मित्र है। पथिक दूसरे के अधीन होने को गुलामी स्वीकार करते है। रामनरेश त्रिपाठी जी कहते हैं-

''अपना शासन आप करो / तुम यही शान्ति है, सुख है

पराधीनता से बढ़ जग में / नही दूसरा दुख है।''

भारत देश की प्राकृतिक सुन्दरता अनन्त है। यहां विविध नदियां मनुज को अमृत प्रदान करती हैं। हिमालय स्वयं इस देश का मुकुट है जो प्रहरी बनकर देश की रक्षा करता है। यहां चारो ओर हरियाली प्राप्त होती है। विश्व के सभी देशों की प्रकृति को भारतदेश ने अपने हृदय में बसा लिया है। रामनरेश त्रिपाठी जी अपनी रचना 'वह कौन सा देश' है, में प्रकृति की अलौकिकता के साथ देश की सौम्यता को दर्शाते हैं-

''मन मोहनी प्रकृति की गोद में जो बसा है।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

सुख स्वर्ग सा जहाँ है वह देश कौन सा है

जिसका चरण निरन्तर रतनेश धो रहा है।

जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन सा है''[21,22]

छायावादी काव्यधारा में प्रसाद जी का नाम प्रमुख है। वैसे तो हम लोग छायावाद को स्वच्छंदतावाद से जोड़कर उसकी इतिश्री कर देते हैं, जबकि छायावादी कवियों ने राष्ट्रीय चेतन से युक्त रचनाऐं लिखी हैं। इसमें राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति तीन तरह से हुई है- 1. भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान, 2. भारत की दयनीय दशा का उल्लेख और 3. भारत के उज्जवल भविष्य की युग दृष्टि आदि । छायावादी कवि राष्ट्रीय गीत सरल और सहज ढंग से सभी के सामने रखते हैं। प्रसाद जी 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' रचना के माध्यम से देश के लोगों का आवाह्न करते हुए राष्ट्रीय चेतना की बात करते हैं तथा स्वतन्त्र राष्ट्र को देखना चाहते हैं। प्रसाद जी कहते हैं-

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से / प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्जवला / स्वतन्त्रता पुकारती

अमर्त्य वीर पुत्र हो / दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है / बढ़े चलो, बढ़े चलो।।''

प्रसाद जी की कविताओं में रहस्य भावना का संचार होने पर भी इतिहास की गौरवगाथा की सुन्दर छवि उद्धृत है। प्रसाद जी भारत भूमि के गौरव को बढ़ाने के लिए कामायनी जैसा महाकाव्य प्रदान करते हैं जिसमें राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होकर मातृभूमि की वन्दना करते हैं।

''अरूण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुंच अंजान क्षितिज को

मिलता एक सहारा।''

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ओज के कवि हैं। उनकी राम की शक्ति पूजा, भारती वन्दना, बादलराग इत्यादि राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व की रचनाएँ हैं, जिसमें निराला जी राष्ट्रहित के लिए मानवतावादी समाज की स्थापना को प्रमुख मानते हैं तथा भारतीय गौरव का बखान करते हुए भविष्य का निर्माण करने हेतु प्रेरित करते हैं-

''भारति, जय विजय करे / कनक-शस्य-कमल धरे।

लंका पदस्थ-शतदल / गर्जितोर्मि सागर-जल

धोता शुचि चरण-युगल / स्तव कर बहु अर्थ भरे।।''

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

निराला जी गरीब, मजलूम, असहाय की वेदना में खुद को खड़ा पाते हैं । उनकी गरीबी, भुखमरी, दीनता को अपनी कलम में स्थान देकर देश के सामने समाज के नंगे सच को उजागर करते हैं । निराला जी 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के माध्यम से दबे-कुचले समाज को साहित्य की मुख्यधारा में लाने का काम करते हैं । गुलामी के कई वर्ष होने पर भारतीयों के हृदय में निराशा घर कर लेती है। ऐसे समय निराला जी राष्ट्र प्रेम जगाकर निराशा को दूर करते हैं तथा भारतीयों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधते हुए ओज एवं ज्ञान से परिपूर्ण करते हैं । देश के गौरवशाली महापुरूषों के पराक्रम, ज्ञान एवं ओज को याद दिलाते हुए खण्डहर के प्रति अपनी रचना में कहते हैं-

आर्त भारत! जनक हूँ मैं / जैमिनी, पंतजलि, व्यास ऋषियों का

मेरी ही गोद पर शैशव विनोद कर / तेरा ही बढ़ाया मान।

रामकृष्ण भीमार्जुन भीष्म / मर देवों में।''[23,24]

प्रकृति के सुकुमार कवि पन्त जी भारत देश की हरी-भरी धरती, गंगा-यमुना की संस्कृति को उद्धृत कर देश प्रेम को दर्शाते हैं । भारत भूमि पर दैन्य, दानव, असभ्य, निर्धन, अशिक्षित, मूर्ख, संकोची आदि सभी प्रकार की मनोवृत्ति वाले लोग निवास करते हैं, लेकिन भारत भूमि बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों का समान रूप से पालन-पोषण करती है। यहां विविध धर्मो, जातियों, भाषाओं के लोग एक साथ निवास करते हैं तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बरकरार रखते हैं। इस संदर्भ में पंत जी अपनी कविता 'भारतमाता' में कहते हैं-

''भारतमाता / ग्रामवासिनी

खेतो में फैला है श्यामल / धूलभरा मैला सा अचंल।

गंगा यमुना में आँसू-जल / मिट्टी की प्रतिमा / उदासिनी।

दैत्य जड़ित, अपलक नतचितवन / अंधेरों में चिर नीरव रोदनं

युग-युग के तम से विषण्णमन / वह अपने घर में प्रवासिनी।''[25,26]

बालकृष्ण शर्मा नवीन मूलतः राष्ट्रकवि हैं। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व स्वतन्त्र देश की आत्मा का स्पन्दन है। जिन दिनों युवा रचनाकार काव्य के बगीचे में प्रवेश कर मधुरभावों का श्रृंगार कर रहे थे, उस समय स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ महात्मा गांधी जी निराश जनता को शक्ति एवं चेतना से युक्त कर राष्ट्रीय भावना की ओर भेज रहे थे। इसी कड़ी में बालकृष्ण शर्मा नवीन भी महात्मा गांधी के पदचिन्हों पर चलकर स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े। इसके लिए उन्हें जेल में डाला गया जहाँ पर उन्होनें जुल्म और अत्याचार सहे। वे गरीबों की दयनीय दशा को देखकर करूणा से भर गए। इसके बाद नवीन जी ने अंग्रेजी शासन सत्ता को विध्वंस करने वाली तान को छेड़ दिया जिससे युवाओं में उत्साह एवं उमंग का संचार हुआ, क्योंकि किसी भी सत्ता को स्थापित करने के लिए पूर्व की सत्ता को विध्वसं करना जरूरी होता है। इस संदर्भ में नवीन जी कहते हैं-

''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ / जिससे उथल पुथल मच जाए,

एक हिलोर इधर से आये / एक हिलोर उधर से आए।

प्राणों के लाले पड़ जाए / त्राहि-त्राहि रव नभ में छाए।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

नाश और सत्यानाशों का / धुंआधार नभ में छा जाए।''

निष्कर्ष

'हम विषपायी जनम'काव्यग्रन्थ नवीन जी की मृत्यु के बाद प्रकाशित होता है। इस साहित्य निधि को सामने लाने में प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नागेन्द्र का प्रमुख योगदान है। इस काव्य ग्रन्थ में नवीन जी की ओजस्वी कविताओं का भण्डार है तथा आजीवन किए संघर्ष, तप का परिणाम है। 'सिरजन की ललकारें' कविता में नवीन जी कहते हैं-

''धधक रहा है सब भूमण्डल / भूधर खौल रहे निशि वासर

सखे, आज शोलों की बारिश / नभ से होती है झर-झर

घन गर्जन से भी प्रचण्डतर / शतध्वनियों का गर्जन भीषण

घर्षण करता है मानव हिम / जग में मचा और संघर्षण''[27,28]

डॉ. रामकुमार वर्मा कवि के साथ ही प्रख्यात आलोचक भी हैं। इन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से क्षत्रिय के पराक्रम के साथ क्षत्राणी के परित्याग को दर्शाया है। जब कोई क्षत्रिय राष्ट्र के लिए युद्ध के मैदान में जाता है, तो क्षत्राणी बेहिचक रणभूमि पर भेजती है। रामकुमार वर्मा जी राजपूतों के राष्ट्रप्रेम और बलिदान का स्मरण दिलाते हुए 'चित्तौड़ की चिता' नामक कविता में कहते हैं-

''कभी थे राजपूत अति न्यून / किन्तु था प्रिय स्वदेश अभिमान,

नारियों ने भी ली असि तान / चढ़ाये रण में आत्म प्रसून।''

राष्ट्रद्रष्टा, युग निर्माता, राष्ट्रीय भावना का संचार करने वाले कवियों में प्रमुख नाम माखनलाल चतुर्वेदी जी का आता है। इन्होने देशहित के लिए सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया था तथा साहित्यकारों द्वारा 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम चतुर्वेदी जी का रखा गया। चतुर्वेदी जी के उपनाम के सन्दर्भ में डॉ. सुनील कुमार परीत जी कहते हैं- ''एक भारतीय आत्मा ऐसा नाम है, जिसने भारत की परतन्त्रता को स्वीकार करने के बजाय उसकी स्वतन्त्रता के लिए कारावास का कष्ट झेलने में भी सुख का अनुभव किया। भारतीय आत्मा शब्द का संकेत है कि भारत मेरा देश है और मैं इसकी आत्मा हूँ। यह एक ऐसा उपनाम है, जो कवि के मानस में व्याप्त भारत देश पर अपने नैसर्गिक अधिकार को दर्शाता है। सच में माखनलाल जी में देश प्रेम कूट-कूट भरा था।''

माखनलाल चतुर्वेदी जी की 'पुष्प की अभिलाषा' रचना सर्वाधिक चर्चित है। पुष्प के माध्यम में राष्ट्रीय भावना का प्रबल स्वर मुखरित हुआ है। इसमें पुष्प केवल प्रतीक के रूप में प्रकट किया गया है। वास्तविकता में भारतीयों के हृदय में देश प्रेम का संचार करना कवि का उद्देश्य है। पुष्प की अभिलाषा जब देशभक्तों के चरणो में अर्पित होने की है, तब कवि भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना का संचार करते हैं। वे कहते हैं-

''चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों मे गूँथा जाऊँ

चाह नही प्रेमी माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ

चाह नही सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊँ

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

चाह नही देवों के सिर पर, चढ़ू भाग्य पर इठलाऊँ

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक''

किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा वहां का सिपाही करता है। एक सैनिक अपने परिवार, नाते- रिश्तेदारों को छोड़कर देश की सुरक्षा के लिए दुश्मनों की गोली के निशाने पर सदा बेखौफ खड़ा रहता है। माखनलाल चतुर्वेदी जी 'सिपाही' कविता में सैनिक के कर्म को याद दिलाते हैं तथा दुश्मन को गोली मारने की जगह पर हुंकार भरने का आग्रह करते हैं, जिससे दुश्मन में सेना का खौफ बना रहे। वे कहते हैं-

"बोल अरे सेनापति मेरे! / मन की घुंडी खोल,

जल थल नभ, हिल-डुल जाने दे / तू किंचित् मत डोल।

दे हथियार या कि मत दे तू / पर तू कर हुंकार,

ज्ञातों को मत, अज्ञातों को / तू इस बार पुकार!

धीरज रोग, प्रतीक्षा चिन्ता / सपने बने तबाही।

कह तैयार! द्वार खुलने दे / मैं हूँ एक सिपाही।''[29]

राष्ट्रीय चेतना के संचार में भारत देश को बहुत से कवि मिले, जिसमें एक मात्र लेखिका के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान जी का नाम सम्मान के साथ आता है। 'चमक उठी सन् संतावन की' कविता के माध्यम से लोक में सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, जिससे इतिहास को निखारने की प्रेरणा प्राप्त हुई। रानी लक्ष्मीबाई से लेकर कई राष्ट्रभक्तों का चित्र उकेरकर सुभद्रा कुमारी चौहान ने जनमानस में स्वराष्ट्र के लिए हलचल पैदा कर दी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्र को जगाने के लिए पुराख्यानों तथा श्रेष्ठ देशभक्तों के जीवन संघर्ष के साथ नये कलेवर में अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया। सुभद्राकुमारी चौहान अपनी कविता 'विजयदशमी' में कहती हैं-

''दो विजये! वह आत्मिक बल दो वह हुंकार मचाने दो।

अपनी निर्बल आवाजों से दुनिया को दहलाने दो।

जय स्वतंत्रिणी भारत माँ यो कहकर मुकुट लगाने दो।

हमें नहीं इस भूमण्डल को माँ पर बलि-बलि जाने दो।

छेड़ दिया संग्राम, रहेगी हलचल आठो याम सखी।

असहयोग सर तान खड़ा है, भारत का श्रीमान् सखी।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 7, July 2017

भारत लक्ष्मी लौटाने को रच दें लंका काण्ड सखी।''

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में राष्ट्रीय चेतना के स्वर स्पष्ट परिदृश्य होते हैं। कवियों ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से लेखकीय दायित्व को समझते हुए राष्ट्र प्रेम के माध्यम से देश को गढ़ने का काम किया है।[30]

संदर्भ

1. रामकुमार वर्मा , धर्मयुग
2. आ. नंददुलारे वाजपेयी , नया साहित्य-नये प्रश्न
3. डॉ. हजारी प्रसाद , चंद्रगुप्त , दूसरा अंक
4. जयशंकर प्रसाद , चंद्रगुप्त , दूसरा अंक
5. इकबाल , वतन के गीत , विनोद पुस्तक मंदर , आगरा
6. निराला , गीतिका
7. इकबाल , वतन के गीत
8. मैथिलीशरण गुप्त , भारत-भारती
9. मैथिलीशरण गुप्त , मौर्य-विजय
10. मैथिलीशरण गुप्त , जयद्रथ-वध
11. रामधारी सिंह दिनकर रेणुका
12. डॉ . सुधाकर शंकर कलवड़े , आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना।
13. http://www.anubhuti-hindi.org
14. कविता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य, मत्स्येन्द्र शुक्ल, आचार्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ 50
15. वही, पृष्ठ 43-44
16. वही, पृष्ठ 54
17. गगनांचल पत्रिका, सितम्बर-अक्टूबर 2016, भारतीय संस्कृतिक संबंध, नई दिल्ली, पृष्ठ 15
18. www. bharatdiscovery.org/india/ रामनरेश त्रिपाठी
19. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, वाचस्पति पाठक, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 51
20. गगनांचल पत्रिका, पृष्ठ 15
21. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, वाचस्पति पाठक, पृष्ठ 99
22. गगनांचल पत्रिका, पृष्ठ 15
23. प्रसाद, निराला, पंत महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, वाचस्पति पाठक, पृष्ठ 172
24. कविता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य, मत्स्येन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 64
25. वही, पृष्ठ 63
26. गगनांचल पत्रिका, पृष्ठ 15
27. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, सुनील कुमार परीट, www.jayvijay.co
28. वही, www.jayvijay.co
29. वही, www.jayvijay.co
30. https://drshailendrasharma.blogspot.com/2013/01/blog-post.html